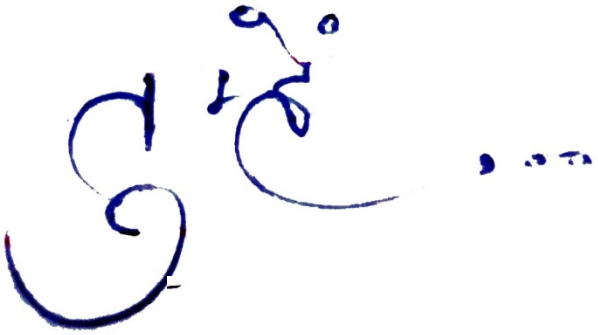

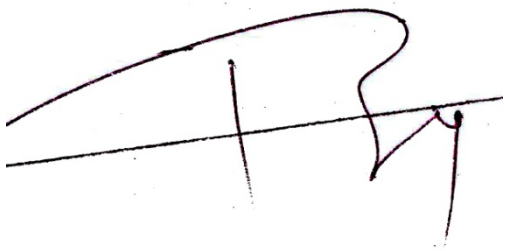

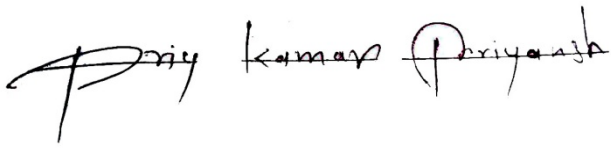

# प्रिय कुमार प्रियांश

उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के धर्मापुर गाँव में,11/12/2002 दिन बुधवार को  मां रेखा देवी की प्रथम संतान सूरज मौर्य का जन्म सुबह 4:00 सुप्रभात में हुआ। अपने पीढ़ी की प्रथम संतान सूरज मौर्य का नाम 2019 की एक घटना के बाद प्रिय कुमार प्रियांश हो गया। पिता श्री सतीश मौर्य एक सामान्य वर्कर है,जो शहर में ही कार्यरत हैं। घर की डामाडोल आर्थिक स्थिति के बीच प्रिय कुमार, 2017 में मैट्रिक - 2019 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की । इसके बाद उन्होंने पूर्वांचल विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की।प्रिय कुमार का प्रिय खेल शतरंज है,और शौक-लिखना

तुम्हें,प्रिय कुमार की पहली किताब है इससे पहले वे किसी भी प्रकार की साहित्यिक गतिविधियों में शामिल नहीं रहे हैं। युवा व नये होने के कारण भाव समाहित शब्द रचना करने में,या साहित्यिक शर्त पूरा करने में उनके सामने तमाम उलझने रही हैं। उन्होंने सिर्फ खुद को आकार दिया है उनकी त्रुटियों को माफ करे. ।

धन्यवाद.....

# भूमिका

एक मुलाकात क्या कुछ नहीं कर सकती ये मुझसे बेहतर कौन समझ सकता है किसी इंसान से मेरी एक रात की मुलाकात ने मेरे रंग-रूप व गुणधर्म सहित सारी क्रिया-प्रतिक्रिया को इतना बदल दिया कि मैं सूरज मौर्य से प्रिय कुमार "प्रियांश" हो गया सच मे ये मुलाकात जितनी खतरनाक थी,उतनी जरूरी भी। इस मुलाकात ने मेरा सब कुछ लूटा, एक तरह से अतीत व जिसमें को छोड़कर मेरा सब कुछ खो गया,मगर मेरे अंदर पड़े इस डाके ने मेरे अंदर के कई असाध्य राज़ उजागीर किए। तुम्हें एक आवाज मेरे अंदर छुपा एक ऐसा ही,असाध्य रहस्य है। भौतिक व आध्यात्मिक प्रेम में संतुलन बना कर चलती ये किताब वक्त-वक्त पे अध्यात्म को छोड़कर भौतिकता का समर्थन करने लगती है। कवि ने 21वी सदी के इश्क को,वास्तविक सुंदरता व अति अनिवार्यता के गलियारों से गुजारे बिना समग्र संसार के सामने परोसा है,यह किताब उन सभी इश्कबाजों को उनकी ही प्रेम कहानी सुनाते हुए आगे बढ़ती है। जो इश्क की उत्पत्ति,उसका विकास उसका,भू पृष्ठ जाने बिना,सौंदर्य के तेज से तेज हिना हो गए। 21वीं सदी में पैदा हुआ 19 बरस का टीनयुक्त युवा,इश्क व प्रेम को जिस दृष्टिकोण से देखता है ठीक वैसा ही दृष्टिकोण इस किताब में एकत्र किया है । ओ चुलबुली सी आंखें प्रकाशमय तेरा चेहरा,लालिमा युक्त गोरा गाल ओ प्रभात सी ताजगी की पूरे बदन की,ऐसे स्वर्ग-जन्नत -जाम-जहान के अंदर जब 19 की जवानी इश्क पे बहस करने उतरती है तो,तुम्हें किस सारी मुक्तक, सारी कविता तथ्य बनती हैं। संबंधों को लेकर हुई गलतफहमी ने मुझ, मुझे नहीं छोड़ा, प्रिय कुमार बनाया। प्रिय कुमार उस रात के,

उस मुलाकात के, उस बात को कंठस्थ करने वाले अनोखे पथ
प्रकाशक का उम्र भर आभारी रहेगा

- धन्यवाद.....

मुझे मेरा पथ दिखाने वाली हे सुरबाला

तेरे हर रास्ते पे तेरी मंजिल हो

- प्रिय कुमार प्रियांश

# सूची


1. तुम ढल जाओगी एक दिन.....11-12
2. तुम कहाँ गये थे.....13-15
3. तुम्हे उम्र भर सम्हलना है.....16-17
4. तुम्हारे पास के सरे सरोवर.....18-19
5. मै तुम्हे बुलाता हु.....20-21
6. मत पुच मेरी औकात.....22-23
7. ज्वा ऐ नींद.....24-25
8. हर उम्र का है तजुर्बा.....26-27
9. नये शहर में जा रहे है.....28-29
10. अब गांव, गांव नहीं रहा.....30-32

11. अप्सरा की तरह दिखाती है.....33-34
12. ऋतुराज बसंत आया है .....35-36
13. ओ जाती थी जिस राह से .....37-38
14. जुल्फ़े .....39-40
15. मुझे वहा मत छुओ.....41-42
16. बहक गई है मेरी जुबा.....43-44
17. मुझे अजनवी मत कहना.....45-46
18. ये राज राज रहे.....47-48
19. मेरा जिस्म सोंना बनता है .....49-51
20. रस्मे तुम्हे निभाना है .....52-53

21. जानवरों के जैसा है व्यवहार तुम्हारा.....54-56
22. एक मैसेज मेरा.....57-58
23. ये बसंत की याद तेरे संग.....59-60
24. ओ पलकों से बुला रही थी .....61-62
25. तुम्हे अमृत पिलाता हु.....63-64
26. तेरा चेहरा खिला है.....65-66
27. न ख्यालो की जज्बाती धारा.....67-68
28. ये बात कहा तक मानी जाए.....69-70
29. हमारे दो तराने.....71-72
30. तुम्हे कितनी बार बताये है.....73-74

31. ऐसे नहीं जायंगे .....75-76
32. कौन सी जाग गयी है जिद.....77-78
33. मै हु.....79-80
34. बदल गयी है नीर की धार.....81-82
35. हम रहे या न रहे.....83-84
36. हवा का रुख बदल गया .....85-86
37. मेरे ईश्वर कोरोना का.....87-88
38. वंहा कम ठहरे थे.....89-90
39. मै बूंद बूंद को तरसा हु .....91-92
40. युग कल्पित.....93-96

41. मुक्तक.....67-120
42. पंक्तिया.....121-142

# तुम ढल जाओगी एक दिन

तुम ढल जाओगी एक दिन

मेरे नयन पथ में रहते

ये रूमानी सतह,ये चौकस निगाहें

ये रुखसार चांद सा,ये सूरज सा लब

ये बदन पर्वत सा,ये दिल जवानी का

सब हार जाएंगे स्वतः

तमाम उलझनों के तमाम सितम सहते ।।

तुम ढल _____1

ये खिली -खिली जुल्फें,ये घनी-घनी छांव

ये ओजस्वी आवाजें, ये प्यारी-प्यारी धुन

ये मोहक मुस्कान, ये सजे-धजे ओठ

अन्ततः खो देंगे अपनी ज़वा -

उमंगीत,तरंगित लहरों में बहते ।।

तुम ढल ----------2

ओ उमस में अकुलाती रात

ओ सपनों की सिसकती मुलाकात

ओ दरवाजे पर खड़ी बारात

ओ विदाई वाली बात

खूबसूरत खूबियों को समेटे कमरे

जिसमें तुम्हें रहना होगा संग-संग ।

ओ चूमने की कोशिश करेगा

तुम्हारे पलकों,तुम्हारे लबो को

उसकी आंखों में आंख कर के

उमड़ना होगा तुम्हें अंग-अंग ।

उस बेरुखी सी शाम में,

अजनबी बाहों के घेरे में,

कट जाएगी ये उम्र -

ज्वलंत-ज्वलाओ में जलते ।।

तुम ढल जाओगे ------4

# तुम कहा गये थे

हर स्वाद,बेस्वाद हो गये

हर रंग बेरंग हो गए

मेरे उमंग,उमस बन गए

तुम कहां गए थे ----------1

हर दिन की तपन सहते-सहते

व्याकुल, मेरे तन मन हो गए

रात की सुहानी हवाओं में

चांद की रूमानी तरंगों में

मेरे जिगर के अंदर-बाहर जलन होती रही -

बेअसर था तुम्हारा याद,

तुम्हारा ख्याल,और गुजरा हुआ एहसास

सुबह सूर्य सा दर्शन तुम्हारा

शाम तुम्हारी बाहों में

चांद और सूरज से थे, तुम मेरे लिए

खेत खलियानो की हवा और पानी जैसे

मेरे हर्षित मन तरंगों में

तेरे अदाओं-निगाहों,अल्फाजो का बहना

आज मैं दर्दनाक दर्द के सलाखों से छूट के

बहारों के बाहों में आयी हूँ

ये जमी,ये झील,ये नजारा तेरी आंखों का

एक उम्मीद की आगोश में,बेरस बन गए

तुम कहां गए थे

हर स्वाद----------2

इक ज्वाला के सुरंग से, हम गुजर गए

इतने कठिन घड़ी में,बिखरे नहीं सवर गए

अब और क्या ? मुझे मेरे अधिकार दो

मुझे बाहों में छुपा लो

मेरे माथे को पवित्र करो

मेरे पलकों पे नमी विखेरो-

ढल गई है निशा जिंदगी से

अब उजाला,उदयाचल में होगा

छठ गए हैं बादल,आसमां से

चांद की चांदनी हमें शीतल करेगी

हवाओं का हल्का झोंका पहेली बुझाएगा

पत्तों की सरसराहट,प्यार का नगमा गाएगी

एक महक उस कुमदनी की,ठहरने को कहेगी

ये नीला-आसमां चुपचाप टकटकी लगाएगा

कुछ दीपक दूर से टिमटिमाते हुए सलाम करेंगे

खुले आसमान में,तुम्हारी बंद बाहों में

हंसते-खेलते मैं कुछ प्रश्न करूंगी

तुम पलके छुपा-छुपा कर

बस स्वीकृतिया प्रदान करना ।

तुम लवो से चूम-चूम कर

मस्तियां प्रदान करना ।

तुम्हें खो देने के विचित्र आकलन से

लब,नयन,श्रवण संग तन-मन

सब के सब,बेबस हो गए थे

तुम कहां गए थे

हर रंग ----------3

# तुम्हे उम्र भर सम्भलना है

तुम्हें उम्र भर संभलना है

वक्त के बेवफाओं का करिश्माई जादू है

न कोई शिकवा,ना शिकायत है तुम्हें जमाने से

तुम एक निरंतर धारा सी बेतरंग-बेरंग

सहमी-सहमी खामोश,

मेरे ना होने के आक्रोश में

तुम्हारे प्रेम-प्रसंग,तुम्हारे अधूरे-अधूरे सपने

एक बड़ी निशा का परिदृश्य झलकाते हैं

तुम कांप जाती हो प्रेम परिवार में उलझ कर ।

कल्पना और हकीकत के पेच में फस कर ।

तेरे रूह के रुसवा से,तेरे अदाओं के अनबन से

डगमगा जाती है सीडियां-

जिस पे पांव रखकर चलना है ।।

तुम्हें उम्र भर संभलना है .....1

ये अहसास ना हो तुम्हारे सिवा किसी को

तुम हमें जानती हो ।

गीता,कुरान,बाइबल से भी पवित्र

तुम हमें मानती हो ।

मेरा चेहरा झलकता है

उगते सूरज,चमकते चांद में ।

हर पल हमें करीब पाती हो

सुबह-शाम और रात में ।

ये सितम बंद करो अफसोस हमें भी है

सदा बहती रहना समंदर तक

बिना रुके-बिना मुड़े ...

# तुम्हारे पास के सारे सरोवर

तुम्हारे पास के सारे सरोवर फूलों से लदे हुए हैं

तुम अवरूद्ध हो अंगार लिए पथ पे ।

वीरांगना सी,तीर तलवार लिए पथ पे ।

तुम क्रोध में जिधर नयन करती हो

नज़रे बाण बन जाते हैं ।

बिना अस्त्र-शस्त्र चलाएं,पागल

लघुओ से काया सन जाते हैं ।

फिर भी अप्सराओं सी-

उतरती हो मेरे आंखों में ।

तेरे उमडते सौंदर्य के यवन से-

कंपन उठता है मेरे शाखो में ।

मैं सराहना करता हूं तेरे धाराओं की

लहर के सारे विकल्प,जुल्फों पे खुले हुए हैं ।।

तुम्हारे पास के .....1

तुम जरा सी चीखती हो,जिगर मेरा जलता है ।

तुम जब भी हंसती हो,मौसम सुहाना बनता है ।

मैं तुम्हें देखते,तुम्हारे महलों तक जाता हूं ।

तेरी हर मोटाई-चौड़ाई हाथों से मापता हूं ।

मायूसी,पाती है छूने वाली स्पर्शी मन-तरंगे

जो तेरे जिस्म की रूमानी सतहें वस्त्रों से ढके हुए हैं तुम्हारे पास के .....2

तुम जाती हो रोज नए-नए,उमंग-उल्लास लिए

मैं इंतजार करता हूं,गार्डन के किसी कोने से-

मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चल देता हूं

तुम्हारी मंजिल तक -

तुम सच कहना,यह बात स्वीकारते समय

सच्चाई के पथ पर रहना -

एक्सेल ऑफिस के सारे मुहाने,गमलों से सजे हुए हैं

तुम्हारे पास के .....3

# मै तुम्हे बुलाता हूं

मैं तुम्हें बुलाता हूं

अपने राहों के जमाने में

अपनी सांसों के तराने में

उमंगीत खुशबू तरंगित जवानी

खुले आसमां की मेजबानी

झरने के स्वर सधे-सधे शब्दों से

नया रिश्ता निभाता हूं

मैं तुम्हें बुलाता हूं मैं तुम्हें बुलाता हूं ---------1

चांदनी अंबर में खिलती है

रात धीरे-धीरे ढलती है

सूर्य का आगमन हो जाएगा ।

तेरी याद है ठहर सी जाएगी

फिर सूर्यास्त करीब आएगा ।

तेरी याद फिर मुझे जगाऐगी

मैं बेमन से बेबस बेआस रहते

तेरे किस्से गाता हूं

मैं तुम्हें बुलाता हूं मैं तुम्हें बुलाता हूं ---------2

आज सो जाएगा ये आसमा

आज गुजर जाएगा ये लम्हा

फिर ना आसमा रहेगा न लम्हा

अगर रहेंगे तो बुढे-बुढे से जल जल

अब प्रौणतरंगता नहीं,रहेगा कल कल

कोई रंगीन रात नहीं

कोई रंगीन बात नहीं

बस सोयी रात जगाता हूं

मैं तुम्हें बुलाता हूं----------3

# मत पुछ मेरी औकात

मत पूछ,मेरी औकात ----------1

मेरे हाथ आसमां छूते हैं

मेरे निगाह क्षैतिज देखते हैं

मेरे पलकों पे पर्वत ठहरता है

मेरे आंखों में सागर लहरता है

मेरे मस्तक मैदान से हैं

मेरे सपने उद्यान से हैं

यह सब देख ताक के-

संभल जा तू रात

मत पूछ ----------2

मेरे श्रवण-शक्ति हर गूंज सुनते हैं

मेरे आवाज तराने से निकलते हैं

मेरी कलम मेरी तरंग छापती है

मेरे मुस्कान से इंद्र हारता है

मेरे पग ब्रह्मांड लाघते हैं

तो हट जा अधूरे-अधूरे सपने के

अकाल,अदृश्य हारे बरसात

मत पूछ ----------3

मेरी भुजाएं मरोड़ती है रुख

खंड-खंड में तोड़ती हैं दुख

मेरी कल्पना हकीकत खींचती है

मेरी जिव्हा सुगंध फेकती है

मैं इशारों में ग्रह-नक्षत्र बनाता हूं

मैं सुबह शाम रात को रोक के-

रोकता हूं तेरी बारात

मत पूछ ----------4

# ज्वाए नींद

खुल गई है,नींद मेरी

मैं सो नहीं पाऊंगा।।

तुम लाख कहो ये रात है

सो जाना बेहतर होगा ।

तुम जिद कर लो मुझसे

तुम तांडव करो,औकात दिखाओ

रास्ते में धमका दो मुझे-

तुम एक दो थप्पड़ मार लो चलेगा

हां,तो कट्टा-बंदूक तलवार दिखाते हो

ये सब रखो संदूक में,जहां से निकाले थे।

मैं बच्चा थोड़ी हूं,खिलौनों से डर जाऊंगा।।

खुल गई है -- -- -- - -- 1

मैं जानता हूं,शैशवावस्था सबकी है

पर मैं 21 वर्षीय ही जवान हूं।

तुम सब धीरे-धीरे जवान हो जाओगे

मेरे जैसे बुद्धिमान-ऊर्जावान हो जाओगे

तब तो तुम्हें मानना ही होगा

ये आसमान में चांद नहीं है।

सूरज अंधेरा भगाने आ रहा है

मेरे विनाश मेरे पतन का

तू मुझे नेता समझे,या अभिनेता

यकीन कर,यह सब दोहराएंगे जब मैं गाऊंगा।।

खुल गई है नींद मेरी मैं सो नहीं पाऊंगा।।

# हर उम्र का है तजुर्बा

हर उम्र का हैं तजुर्बा

जो हमें समझाते हैं

ओ कहते हैं पानी हो तुम

रहना सीखो बहना सीखो

इधर-उधर मत भटको तुम

कुछ सहना सीखो,कुछ करना सीखो

न जाने कौन सा दीपक

तेल लिए तुम्हें देख रहा है

कि वह मुझे भी लौ दे जाएंगे

मैं भी,अपना जीवन जी लूंगा

ऐसा उत्साह जोश भर के खुद मे

हमे डराने के चक्कर में

ओ खुद डर जाते हैं ।।

हर उम्र का ----------1

ओ कहते हैं बूंद-बूंद से

समंदर भर आएगा ।

उम्र बड़ी लंबी है यारों

कोई-कोई अंबर हो जाएगा ।

सतत निरंतर प्रगतिशील पथ पे

होते हैं जो अपने -

वही पाते हैं हर खुशी-रंग

झोली भर भर के

उनका प्रवचन शुरू होता है

धूप-छांव-बरसातों में ।

घोर उदासी,घोर गम रहता है

उनकी बातों में ।

और-और-और चेहरे पे हमेशा

उम्मीद-ख्वाब के विस्तृत सागर लहरते हैं।।

हर उम्र का है तजुर्बा ----------3

# नये शहर में जा रहे है

नऐ शहर में जा रहे हैं

मन बुलबुले सा - तन उतावला ठहरा ।

ख्वाहिशों के शोर से, कान हुआ है बहरा ।

ढेरों स्वप्न पनफते हैं

नयन नहीं सोते हैं

फुर्तीली आंखे हैं जगती

लबों पे खामोशी नहीं रहती

कल-कल,सन-सन आवाज में

उल्लसित नयन,उम्मीद सजा रहे हैं

नऐ शहर में जा रहे हैं ----------1

कुछ पंख हमे मिल जाएंगे

हम नभ पे चढ जाएंगे

फिर मसाल चलाएंगे,प्रभा जग जाएगी ।

फिर सबकी नजर, हमपे ठहर जाएगी

या ये समझे कि ठहरी-

ही रह जाएगी ।

चार छः लोग,रोज आएंगे

चौखट पे

बाबा-पापा से रिश्ते की बात करने

यही मनमोहक स्वप्न सोच के

मुझसे नैन मेरे लजा रहे हैं

नऐ शहर में जा रहे हैं----------2

गांव की शांति नहीं रहेगी

चहल-पहल मे ही जाएंगे

खाने को कुछ नहीं रहेगा

पानी पी के सो जीएंगे

मगर मेहनत की बरसी पे

दौलत का अम्बार लगेगा

मस्त मस्ताने मस्तक पे

कल आसमानी सेहरा सजेगा

मैं कल्पना करता हूं भविष्य की

मेरे द्वार पर लोग बाजा बजा रहे हैं

नऐ शहर में जा रहे हैं----------3

# अब गाँव गाँव नहीं रहा

अब गांव-गांव नहीं रहा

ओ मोहक हरियाली,ओ सुगंधित हवाएं

पक्ष-विपक्ष की ओ पंचायत,ओ सभाएं

ओ खिले हुए चेहरे,ओ बैलों की घनघनाहट

ओ बारिश के मौसम,ओ रातो की सनसनाहट

ओ लंबे-चौड़े,खेत-खलिहान

ओ स्वच्छ सुनहरे नीले आसमान

ओ कुदरत की झांकियां,ओ अन्धी आधीयाँ

ओ मंजर,ओ दृश्य,ओ सजी झोपड़ियां

ओ आम का बगीचा,ओ चारागाहो वाला खेत

ओ उभर-खाभर रास्ता,ओ रेगिस्तान वाला रेत

सब के सब,बदल गए -

धीरे-धीरे हमारे,आपके बदलाव से

यहां तक,अब वृक्षों का ओ छाव नहीं रहा

अब गांव,गांव नहीं रहा ----------1

ओ बूढ़ी माताओं की टोलियां

खेत खलियानो में ।

ओ नव वधू खेलती

आंगन-आशियानों में ।

ओ बैलों की धरपकड़

ओ जमाना बैलों की तारीफों का ।

खेत की गुड़ाई कटाई में

सराहना युवा तरकीबो का ।

ओ बड़े-बड़े करार-भिटे

खेत बनाए गए ।

इन्हीं गोबर की खादो से

बहुदा फसल उगाए गए ।

सिंचाई,मड़ाई,कटाई

कच्चे घरों की बुनाई में

जिससे दम लगा गए पूर्वज

अब ओ हाथ-पांव नहीं रहा

अब गांव,गांव नहीं रहा ----------2

ओ लोकगीतों की संध्या

ओ नाच गानों के खेल।

ओ बुजुर्गों की सहमति से

नव जोड़ों का मेल ।

ओ रस्म व्याहो कि

ओ कहारो,ओ डोलीया ।

ओ एक सुर में पगड़ी वाले

दोनों पक्षों की बोलियां ।

ओ मेल-जोल,ओ मिल-मिलाव

ओ सजे सजन,ओ सजनी का पहनाव

जा रहा है हाथ उठाए

अलविदा कहते -

कल-आज को जोड़ने वाला

कोई नाव नहीं रहा

अब गांव-गांव नहीं रहा----------3

# अप्सरा की तरह दिखती है

अप्सरा की तरह दिखती है

अप्सरा की तरह दिखती है

कल ये आसमा खामोश था ।

कल ये समा मदहोश था ।

प्रभात की प्रथम किरण आसमान में थी ।

मेरी विफलता की विकलता मेरे तापमान में थी ।

कि सामने के महल का दरवाजा खुला

उसके बिम्ब मुझसे ये कह गए

ओ प्रभा में कमल की तरह खिलती है

अप्सरा की तरह .....2

अचानक वह फिर गुम हो गयी

मेरे रोम-रोम उठ से गयी

उसके प्रतिबिंब के प्रदर्शन से,हजारों प्रश्न उठने लगे।

ओ कौतूहल का केंद्र बन गयी,मन गोल-गोल घूमने लगे।

अचानक मिली उसकी झलक

मेरी बेताबियां हवा हो गयी

वह कॉल सेंटर को जा रही है

हाथ हिलाते,परिजनों से मुस्कुराते

उसकी मुस्कान देख लगा

ओ देवियों की तरह हंसती है

अप्सरा की तरह .....2

फिर कदम इतने दृढ़ निश्चय होके बढ़े ।

हर ओर हरियालीयों के बादल टपक पड़े।

उसके पथ से अनगिनत रोड़े हटने लगे

मानो कालचक्र की तरह चलती है

अप्सरा की तरह .....2

देखते ही देखते,ओ हवा हो गयी

इन आंखों को कौन समझाए,कि वह गुजर गयी

वर्षों बाद बैठा था उसी महल के मुहाने

अचानक उसी छटा से उसकी याद उभर गयी

फिर मैं उन हवाओं को करीब से देखता हूं

और ओ उन हवाओं में फिर मिलती है

अप्सरा की तरह .....2

# ऋतुराज बसंत आया है

ऋतुराज वसंत आया है

इन हरियाली के चौखट पे

आज कोयल बोल रही है ।

एक उमंगीत,उम्मीदा स्वर लिए

मानो सारे राज खोल रही है ।

ये पवन का हल्का-झोंका भी

खुद पे गुमान करता है ।

एक काल्पनिक लय में चलते हुए

मौसम का सम्मान करता है ।

जिसे खोजते हैं सारे प्रेम-पथिक व नवयुवक

वही जमीन का अनोखा संत आया है

ऋतुराज वसंत.....2

हजारों-हजार मील से वही साइबेरियन पन्क्षी

जब स्वदेश की तरफ पढ़ते हैं ।

शीत-ग्रीष्म के बीच,हवा वाले पत्ते

जब टहनियों से निकलते हैं ।

उत्तर भारत के वृक्ष फलों के राजा आम

जब अपनी मन्जरीयां दिखलाते हैं

तब लगता है यहीं पे स्वर्ग उतरा है

और जमीन के करीब अन्नत आया है

ऋतुराज बसंत.....2

जब छांव-धूप,हवा-पानी सब मोहक लगते हैं ।

जब खिले-खिले परिवेश,सुनहरे सुबह-शाम रहते हैं

जब रात अजब ठंड,अजब उमस लिए चलती है।

जब चांदनी भी अपने रंग-अपने उमंग में बहती है।

तब एक प्रेमिका प्रकृति पे फिदा होके ।

अपने होश-हवास सारे बंधन से जुदा होके ।

चिल्ला-चिल्ला के कहती है

मुझे जलाने,नज़ारा ज्वलंत आया है

ऋतुराज बसंत.....2

# ओ जाती थी जिस राह से

ओ जाती थी जिस राह से

वो रास्ता रहा ही नहीं

मैं धूल संजो पाऊं उसके पैरों की

मैं हवा का एहसास कर पाऊं उसके अधरों की

जो छू कर उसे बहुत इतराते थे

असल किस्सा ये है किस्मत का

कि आज व कल का,कोई वास्ता रहा ही नहीं

हो जाती थी जिस राह .....1

मैं स्वप्न में जहां हर रोज -

टहला,हर रोज घूमा था ।

ओ गुलमोहर का छांव,ओ चबूतरा

जहां उसके दर्शन से झूमा था ।

सब वक्त के घास में छिपकर गुजर गए

ओ ढलती शाम,ओ खेत-खलियान का नजारा

जहां उसको पहली बार देखा था ।

नियति के अदल-बदल में बदलकर

ओ आंख का मंजर,ओ संजीदा चित्र समेटे

अतीत का जीवित,कोई दास्तां रहा ही नहीं

ओ जाती थी जिस राह .....2

# जुल्फ़े

ये प्रेमियों की अवरुद्ध धार हैं ।।

ये जब हवा के संग हो,लयबद्ध गति है इनमें

इन्हें छू के देखो,ये फिसलती हैं

ये रुखसार तक,आंखों तक

स्वतंत्र हैं आने-जाने को

इन्हें बारंबार सहेजा-सवारा जाए

फिर भी ये बेअसर हैं

इनमें रंगो के रत्न जड़े जाते हैं

प्रेमिकाओं के बड़े श्रंगार हैं ।।

ये प्रेमियों की.....1

इनके बगैर सौंदर्य की

कल्पना ही अकल्पनीय है ।

इनका किरदार प्रेमियों को

बुलाने में अतुलनीय है ।

ये जब लहरती हैं,लहरा जाते हैं

सौंदर्य के विरोधक ।

इनके चमक,इनके प्रकाश से

निष्क्रिय हैं सारे अवरोधक।

बेशक खुश हैं पाके, सारी प्रेमिकाऐ

ये ईश्वर के अमूल्य उपहार है ।।

ये प्रेमियों की .....2

जब प्रेमी के रुखसार को ढकती हैं ।

जब उनके जिस्म पे तैरती हैं ।

अजब की ठंड का एहसास है इनके छांव में ।

इनके लहराव की गजब निरंतरता है अनोखे राह में।

प्रेमियों की नजर टिक जाती है कभी-कभी

मैं खुद जानता हूं,उन्हें समझाना मुश्किल होता है

ये उमडते स्वप्न के,उत्कृष्ट भावनाओं पे

मन तरंगों की इकलौती कतार हैं ।।

ये प्रेमियों की.....3

# मुझे वहाँ मत छुओ

मुझे वहां मत छुओ,जहां मैं फिसलती हूं

तेरे छूने से मेरे अंदर,अथाहः ऊर्जा जागती है ।

मेरे जिगर में एक,

झनझनाहट जन्म लेती है ।

रगों में खून उबलते हैं,मेरे आंखों की झील से

गर्म हवाएं निकलती हैं,

मानो सारे सारे जलते हैं ।

तेरे आवाजों में अजब सी उसडता है

तेरे आवाजों के ध्वन्ध से,मैं बेखौफ मचलती हूं

मुझे वहां मत छुओ .....1

मैं सब कुछ फांद कर,तेरे पास पहुंच जाऊंगी

तू लब खामोश रख,वरना अभी निकल जाऊंगी

निगाहें हटा ले मेरे नैन-पथ से ।

और खुद उतर जा अपने रथ से ।

तब जाके लबो से लव मिलाऊंगी

तब जाके जिगर से जिगर लगाऊंगी

अगर ये तुमसे संभव नहीं है तो

ये अदाएं मेरी,तेरे लिए मुमकिन नहीं है

तेरे अदाओं से मैं हर वक्त उबलती हूं

मुझे वहां मत छुओ.....2

तेरे संग ही गाउंगी,तेरे धुन मे

तेरे संग ही बह जाऊंगी, तेरे जुनून में

मगर तुझे सर झुकाना पड़ेगा

इस खता का कर्ज चुकाना पड़ेगा

ठहरो-ठहरो मुझे बहलाओ मत

मैं ऐसी अदाओं से और दहकती हूं

मुझे वहां मत छुओ.....3

# बहक गयी है मेरी जुंबा

बहक गई है मेरी जुबां

तेरे चित्र,तेरे चरित्र से

जब आसमा देखती है तू

आशियाने से,आगन से

पुलकित होता है आसमां

खिलखिलाने लगती है आंगन

सब तुम्हें छूना,सब तुम्हें निहारना चाहते हैं

अभी से अंत तक

मैं अपने महा मंजिला भवन से देखता हूं

तुम्हारे बारे में पूछता हूं

तेरे कदम-कदम के निशान वाकिफ है

मेरे खास मित्र से ||

बहक गई है मेरी जुबां

तेरे चित्र तेरे चरित्र से .....1

मैं उस खास मित्र का आवाहन करता हूं

उससे एक मुलाकात का सहारा चाहता हूं

जो जीत ले गई है कई सौ वीरो को ।

उसका नाम याद है

हजारों-हजार अधरों को ।

जिसकी अदाएं नींद में स्वप्न बनती है

बेनीदं में भ्रम

मैं उसे हूं पहचानता

उसके जुल्फों के इत्र से

बहक गई है मेरी जुबां

तेरे चित्र तेरे चरित्र से .....2

# मुझे अजनवी मत कहना

मुझे अजनबी मत कहना

मैं तेरे दिल की गलियों से गुजरा हूं ।

तुझे पाने की चाहतो से,मैं निखरा हूं ।

तुम्हें देखना,तेरे संग रहना नामुमकिन है ।

बस तुझे लबों से अपना कहना,मुमकिन है ।

मैं जिस शहर में रहूं खोया-खोया

वही बनके वसंत की ऋतु रहना

मुझे अजनबी .....1

मैं तेरे हर छोटे-बड़े किस्से में

तेरा अपना हूं,हर रिश्ते में

फिर भी खामोशी है,उदासी है

ये दिल तेरी जहां का निवासी है

मैं तरसा हूं,हर बूंद-बूंद को

तुम जल प्रताप बन के गिरना

मुझे अजनबी .....1

तुम जा रही हो बड़े उमंग से

मेरे राह के हर एक रंग से

तरंग अर्जित कर लेंगी,मेरे जीवन की धार

बस तुम मेरे अगल-बगल ही बहना

मुझे अजनबी .....1

हम नहीं होंगे तुम्हारे दिल ओ दिमाग में

सिंदूर बन,टिम-टिमायेगा कोई तुम्हारे मांग में

उस सितारे के तन-मन में ठहर के

उसके सारे जख्म भरना

मुझे अजनबी .....1

# ये राज, राज रहे

ये राज़,राज़ रहे

हकीकत उलझी रहे तेरे खामोशी में

कोई देखने की कोशिश करें,तेरी आंखों में

मुझे और गहराई में छुपा लेना

उन्मुक्त गगन में कभी चांद

कभी सूरज को निहारते वक्त

हवाओं में मुझे एहसास करना

रजनी पति के तरंगों में जब कभी अकेले रहना

छत से नजारे नहलाते हुए बस मुझे याद करना

मैं भी आशियाने से तेरी दिशा में

तुझे एहसास करूंगा ।

अध्यात्मिक ध्वन से संवाद होगा

तुझे दूर से पास करूंगा ।

सम्भलना इस तन्हाई में,लव खामोश रहे

नयन स्थिर होकर मेरे काल्पनिक बिम्ब से टकराये

और हमारे-तुम्हारे संवाद के रंग,अंदर रहे

और अंदर ही आवाज रहे

ये राज़ राज़ रहे .....1

उस पल जुल्फें खुली रखना

और लबों पर खिली मुस्कान

आंखों में अजीब हरियाली

रोम-रोम में उत्साह -

और दिल में मिलन की एक संभावित आशा

पलकों को नयन पे झुका के

हाथ को हिलाते हुए,अलविदा-अलविदा -

फिर मिलेंगे शब्द को अधर पे सजाके, विदा करना

पर याद रहे ये अमर प्यार

किसी भी आकर्षण,उम्र ,दर्शन का कभी न मोहताज रहे

ये राज़,राज़ रहे.....2

# मेरा जिस्म सोना बनता है

इन हवाओं की रूमानी शामों में

इन परिंदों की ऊंची उड़ानों में

नित प्यार के गीत बजते हैं

लाल किरण लालिमा परोसती है

मेरा जिस्म सुनहरा बनता है

अंधेरों का लश्कर नई-नई चाल से

उतरता है घूंघट डाले उमंग इस काल से

अंधेरे में सब खो जाते हैं

काली किरण कालीमा परोसती है

मेरा जिस्म काला बनता है

लाल किरण लालिमा परोसती है

मेरा जिस्म.....2

कुछ कदम आगे बढ़ते हैं अपने आधार से

एक तरंग उतरती है विराने संसार से

रजनीगंधा के सुगंध चलते हैं

सुनहरी किरण सुंदरता बिखेरती है ।।

लाल किरण लालिमा परोसती है ।।

मेरा जिसमें सोना बनता है .....2

मैं बगैर थके,बगैर रुके बिंदास रचता हूं

सबके विचारों के मिलते-जुलते परिणामों को भटकता हूं अगर अपने पथ से तो फिर संभलता हूं सुबह-शाम-रात ,सबमें कैद करता हूं

अपने अंदाजो को

संसार के नींद खुलते हैं

फिर लाल किरण लालिमा परोसती है

मेरा जिस्म सोना बनता है

मेरा जिस्म सोना.....2

इन हवाओं की रूमानी शामों में

इन परिंदों की ऊंची उड़ानों में

नित प्यार के गीत बजते हैं

लाल किरण लालिमा परोसती है

मेरा जिस्म सुनहरा बनता है

अंधेरों का लश्कर नई-नई चाल से

उतरता है घूंघट डाले उमंग इस काल से

अंधेरे में सब खो जाते हैं

काली किरण कालीमा परोसती है

मेरा जिस्म काला बनता है

लाल किरण लालिमा परोसती है

मेरा जिस्म.....2

कुछ कदम आगे बढ़ते हैं अपने आधार से

एक तरंग उतरती है विराने संसार से

रजनीगंधा के सुगंध चलते हैं

सुनहरी किरण सुंदरता बिखेरती है ।।

लाल किरण लालिमा परोसती है ।।

मेरा जिसमें सोना बनता है .....2

मैं बगैर थके,बगैर रुके बिंदास रचता हूं

सबके विचारों के मिलते-जुलते परिणामों को भटकता हूं अगर अपने पथ से तो फिर संभलता हूं सुबह-शाम-रात ,सबमें कैद करता हूं

अपने अंदाजो को

संसार के नींद खुलते हैं

फिर लाल किरण लालिमा परोसती है

मेरा जिस्म सोना बनता है

मेरा जिस्म सोना.....2

# रस्मे तुम्हे निभाना है

कभी न मानो मन के मानक

कभी नहीं झल्लाओ इतना

वक्त की फरहदी पर

वक्त संग ढल जाना है

रस्मे तुम्हें निभाना है ----------1

रुप श्रृगार है समृद्धशाली

मन में कोतुहल है जारी

धीरे-धीरे समझ जाओगी

हमे तरसते रह जाना है

रस्मे तुम्हें निभाना है ----------2

बंधन है मामूली,उत्सुक है अंग अंग

पर चिंगार के करीब,चिराग है सहमा

बस यादों में,ख्यालों में

लहरों संग बह जाना है

रस्मे तुम्हें निभाना है ----------3

स्वीकार करो अपनी अदा चलो अकेले

बड़ी असहने सहकर हमने फैसला किया

इस फैसले की रंगत पे

बिन मिले मर जाना है

रस्मे तुम हो निभाना हैं----------5

चाह रखोगी जीवन भर का

प्यार करोगी उम्र भर तुम

पर सच्चे अच्छे इस बंधन पे

दाग अनेको,लग जाना है

रस्में तुम्हें निभाना है----------4

तड़पो मत,तुम बहको मत

मेरे लिए,अब तरसो मत

अपने प्यार के मायने यही

हाथ उठाके-मुस्कुराके

अलविदा कह जाना है

रस्मे तुम्हें निभाना है.....6

# जानवरों के जैसा व्यवहार तुम्हारा

जानवरों के जैसा है व्यवहार तुम्हारा

दिखा दिए ना अपनी औकात

कैसे प्यार करेगी ओ बोल

कैसे विश्वास करेगी ओ

नामुमकिन है तुम दोनों का मेल

तुम्हें तो प्यास लगी है

भूख लगी है उसके जिस्म की

मिटा ले भूख-प्यास

बस,बस भूख-प्यास से बढ़कर

कुछ नहीं है प्यार तुम्हारा

जानवरों के जैसा है.....1

कभी समझ में नहीं आयी

ऐसी क्या पहेली थी ओ

जरूरत,जरूरत पड़ने पे

पास जाते हो, क्यों

कभी जाओ फुर्सत में

बिना मतलब के उसके करीब

उसे बाहों में लो,उससे बातें करो

उससे अपना दुखः सुख कहो

धैर्य के साथ उसके पास बैठके

उसे एहसास करते हुए, विश्वास दिलाते हुए

गंभीर होके उसका दुखः सुख सुनो

पत्थर पिघल जाएगा बे

ओ तो तुमसे प्यार करती है

देख भाई,एक बात मान

धोखा,गुस्सा,नफरत व जलन

यही सब है आधार तुम्हारा

जानवरों के जैसा .....1

तू एक काम कर भाई

ओ क्या करती है छोड़

तू अपनी रूटीन बना

सुबह 4:00 बजे उठकर पार्क में

आधे घंटे जोगिंग,योगा व्यायाम करना

5:00 बजे चाय या काफी बनाकर

ओ जहां भी हो,पार्क में फूलों को सीच रही हो

या बेडरूम मे सोयी हो

कहीं भी हो, दो कप चाय लेके

ताजगी के संग मुस्कुराते हुए

गुड मॉर्निंग प्रिये, गुड मॉर्निंग

गुजरे हुए अतीत की नहीं आने वाले कल की

चाय चुचियों संघ टहलते हुए बातें करो

फिर ब्रेकफास्ट क्या बना ले

आज क्या खाने का मन है

लेकिन नहीं तुमसे यू होगा नहीं

तुम तो नवाब हो और वह तुम्हारी दासी, क्यों

बस इसी रौब व अकड़ में

चिखते-चिखते,डांटते,चिल्लाते

लाल-पीला हो जाता है रुखसार तुम्हारा

जानवरों के जैसा.....1

# एक मैसेज मेरा

एक मैसेज मेरा

तेरे यादों में होगा

तुम भुला ना सकोगे उसे

वह इस कदर दिल में है

फोन की मेमोरी नहीं हो

ना डिलीट के ऑप्शन हैं

तुम दिल आज लगा लो

हम सबसे,सबसे हैंडसम हैं

हमें मालूम है यारा मेरे जैसा

कोई न कोई तेरे इरादों में होगा

एक मैसेज मेरा.....,.... .....1

सब कुछ लगा के सब कुछ लुटा के

सिर्फ तुझे पाना चाहूंगा

मैं किसी और का हो जाऊं उससे पहले

सिर्फ तेरा होना चाहूंगा

मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं

जिसमें लिखा है स्वर्णिम अक्षरो से

ऐसा कोई न कोई पन्ना

तेरे किताबों में होगा

एक मैसेज मेरा.....1

तुम्हें ही देखा करती हैं

सुबह शाम मेरी दो निगाहें

तो स्वीकार कर लो तुम आज

मेरी ये राहें,मेरी ये बाहें

मैं तेरे बिन मर जाऊंगी

मैं तुम्हें ही चाहूंगी

तुम मेरे हो मेरे,इस जन्म से उस जन्म तक

याद करो अतीत का एल्बम

ऐसा कोई न कोई वादा

तेरे वादों में होगा

एक मैसेज मेरा.....1

# ये बसंत की याद तेरे संग

ये बसंत की याद तेरे संग

तू बाहों में बनके मणि

निगाहों को सोखती है ।

तू लबों से बाहर के सरिता

रुखसारो को सिचती है ।

तू अविचल,ढृढ होकर पर्वत सा

मेरे मुस्कान को देखती है ।

यह ख्वाहिश है अब तो

लबों को चुम ले लबों से

आज का वस्ताद तेरे संग

ये बसंत की याद ते----------1

कुछ स्वीकृतिया चाहती हो

कुछ अनोखा अंदाज दिखाके।

कुछ गीत गुनगुनाती हो

कुछ बड़े राज छुपा के ।

कुछ सलाखें तोड़ती हो

कुछ अनमोल रिश्ते निभाके

आज लूटा दो जिस्म का सारा रंग

उम्र का आजाद तेरे संग

ये बसंत किया ते----------2

जो निकल गए शब्द आंखों से

ओ शब्दहीन न हो पाए

जो न समझा सका नयन मेरा

वह भावार्थ तुम समझना

मिला के सारे अंग

मिलाके कोशिका-कोशिका

एक अध्यात्मिक मिलन की

जबरदस्त प्रस्तुति हो -

तो आजा मेरे जिगर पे

पलकों की फरियाद तेरे संग

यह बसंत की याद----------3

# ओ पलकों से बुला रही थी

ओ पलकों से बुला रही थी

धीरे-धीरे घटा चढ रही थी

पल-पल हवा बढ़ रही थी

उसके केस कयामती,करामात में थे

लबो,नैनो की सतह पे बिखरे-बिखरे

वह संजो के हर रहस्यमयी उलझन

मुझे ख्वाबों में सुला रही थी

ओ पलकों से बुला रही थी .....1

नीले- नीले राजश्री वस्त्रो में

गुलाबी लबो,नीली आंखों से

कदम-कदम हर कदम पे

कमल सी खिल रही थी

अजनबी अमरात्व मुस्कान से

उच्च दर्शन के,उद्यान से

मन तरंगों में तरल सी बहके

रोज की अनबन निगाहें

आज वक्त पे मिला रही थी

ओ पलकों से बुला रही थी.....2

चांदनी सी चमक चेहरे पे

सूर्य सी दमक होठों पे

कुछ रुकी-रुकी, कुछ झुकी-झुकी

झील सी झलक नजरों पे

जंगली-जलेबी के छांव में ठहर के

इश्क आंखों से पिला रही थी

ओ पलकों से बुला रही थी .....3

इस समंदर के हर,योद्धाओं से डर के

उस जमाने की सारी,परंपराओं से डर के

मंजिल के करीब संकुचित-संकुचित

सोफा व दस्तार धारी, दादाओ से डर के

बैठ के सखियो के कैद में

अपने अरमा जला रही थी

ओ पलकों से बुला रही थी .....4

# तुम्हे अमृत पिलाता हूं

तुम्हें अमृत पिलाता हूं

फिर से जीवन दिलाता हूं

तुम्हें अमृत पिलाता हूं

तुम जीवन जीना जी भर के ।

असत्य,हिंसा,अत्याचार पे रहके।

मैं आज फिर हारा हुआ हूं अपने नाम से ।

अपने धर्म अपने कर्म पर रहते हुए अपने काम से।

लोग मुझे कहते हैं  सबकी तकदीर जगाता हूं ।।

तुम्हें अमृत .....२

तुम बड़े क्रूर,निर्दयी,पापी हो ।

तुम शैतान की हूबहू काफी हो ।

मैंने वचन लिया है अपने ज्ञान से ।

हर जख्मी का जख्म भरूगा,अपने विज्ञान से।

इसलिए आए हो यहां,ये किस्सा है मेरे बारे में

यमराज को भी समझाता-बुझाता हूं ।।

तुम्हें अमृत पिलाता हूं ।।

तुमसे मेरा रिश्ता चाहे जैसा हो

छोटा बड़ा अच्छा बुरा चाहे ऐसा वैसा हो

मैं चिकित्सक,तू रोगी

ये संबंध हमारे बीच में है

मैं हमेशा ये संबंध निभाता हूं।।

तुम्हें अमृत पिलाता हूं ।।

# तेरा चेहरा खिला है

तेरा चेहरा खिला है

तुम अनेक पत्ते फैलाए

लबों पे मुस्कान तराए ।

जिद करती हो एक निकालो

आंख से आंखें मिलाए ।

मैं बहुत खोजता हूं बहाने

लेकिन वह कहां मिल रहे हैं

मुझे मालूम नहीं कौन सा पत्ता -

कौन सा रहस्य समेटा है ।

मुझे भी शक है इस पर

ये कुछ उल्टा सीधा ही लपेटा है ।

आखिर ले लिए हमने

उसमें कुछ नही मिला है ।।

तेरा चेहरा .....2

यही हार है-यही जीत है

यही छोटी सी नादानी ।

अब तुम ओ किस्सा सुनाओ

जो सुनाते थे,कभी नाना-नानी ।

मुझे याद था, ओ चंदा-मामा

ओ दूध कटोरी,ओ नींद की लोरी

पर मैंने सुनाना आरंभ किया

एक छत के नीचे थे,एक छोरा-एक छोरी

लो यही तुम्हारे,नाना-नानी का

किस्सा है यारा ।

तभी तो तुम निकल गए

सलाखें तोड़ते आवारा ।

अब मेरे खींचतान का

चल रहा ये सिलसिला है ।।

तेरा चेहरा .....2

## न ख्यालो की जज्बाती धारा

न ख्यालो की जज्बाती धारा

न तुम्हारे आंगन का शोर है

न तेरी आवाज है,न तेरी झलक है

न तेरे होने का एहसास है, न नयन कमल है

न जहां भुलाने का दर्द है,न तुम्हें भूलने का

फिर भी आफत है, तबाही की तारीख है

सुनहरी शाम,ओ रात,ओ भोर,ओ सूर्योदय

ओ प्यार, ओ आशु,ओ इंतजार

ओ रास्ते में हंसी मजाक,

मेरी हर धड़कन के साथ मेरे अतीत से जुडा-

न जाने क्यों मुझे याद,

वक्त का गुजरा छोर है ।।

न खयालों की जज्बाती .....1

वह दृश्य जिसकी तीखी आलोचना होती थी

उसके दिल-दिमाग में बेवकूफी भरा किरदार निभाया ।

तू नादान,घमंडी,नाइंसानियत की शोहरत पाई

पर दिलों को मेरे एक कामयाब नवाब बनाया ।

तुम्हारे तिरस्कार अस्वीकार से मैं खुश हु

ये एक मानव के अपने अधिकार अपने संस्कार हैं

मेरी जिंदगी के राह में

डरावनी आवाजें,अंधकारओं का साया था

अचानक भोर में उजाला हुआ

अब जिंदगी उजाले का डोर है ।।

न खयालों की जज्बाती .....2

बंद सा पडा था,मृतक समान जीवित था

उस सूर्योदय ने मुझमे अपार ऊर्जा भरी

मैंने प्रतिशोध का एक रास्ता चुन लिया

आक्रोशित आश्चर्यचकित रह के अंदर अंदर

आज ओ अंगार पूरी प्रचण्डता दिखाएं

रुक-रुक के दहकता,अपने जवानी में घनघोर है।।

ख्यालों की जज्बाती .....3

## वक्त संग ढल जाना

ये बात कहां तक मानी जाए

कि वह इस अंबर के नीचे

बहते बादलों के किनारे

पशु,पंछी ,वन वृक्षों के संग रहती है ।।

यह बात कहां तक मानी जाए

ओ अपने फरेबी नजरों से ।

बेहद खामोश रुखसारो से ।

और गुलाबी-गुलाबी अधरों से ।

बड़े बेताब,बेजान और बेनाम अदाओ संग -

मुझे हर पल याद करती है ।।

पशु पंछी बन वृक्षों के संग रहती है ।।

यह बात कहां तक मानी जाएगी

मैं मानता हूं उसके कई किनारे हैं ।

हमारे जीवन में उसके कई सहारे हैं ।

अगर वह चाहती तो हम जमी छोड़ देते ।

या उसके सहयोग से हम रास्ते मोड़ देते ।

पर उसे ये गुरूर है,ये हार जाएगा -

बस इसी भ्रम में वह हजारों कष्ट कहती है ।।

पशु पंछी पर वृक्षों के संग रहती है ।।

कभी-कभी मैं हंसता हूं उसको यह लगता है ।

मेरे जीवन में बस खुशी-हंसी ही उतरता है ।

पर उसे वक्त की गहनता पे यकीन है ।

कि काल निरंतर चलने वाली मशीन है ।

आएगा,आएगा,आखिर आएगा उम्र बड़ी लंबी है

यही नगमा हर पल इनसे-उनसे,सबसे कहती है।।

पशु पंछी बन वृक्षों के संग रहती है।।

# हमारे दो तराने

हमारे दो तराने हैं अलग-अलग दिशा में बिखरे

मैं पाना दोनों को चाहता हूं

दोनों दिशाओं में चलके ।

एक की गोद में बैठ के

दूसरे की गोद में पलके ।

ये कैसे संभव है समय वक्र के,चक्र की परिधि में।

दोनों पालो में कैसे विराजेगें,काल की एक ही अवधि में ।

विचरण करती है उन्मुक्त गगन में मेरी शिखाएं

मेरे उम्मीद के शहर हैं दोनों दशा में सकरे

हमारे दो तराने .....1

मैं बिछड़ गया ग़र इनसे,तो अधूरा रह जाऊंगा ।

मेरा असमय अंत ना हुआ,तो बहुत कुछ कह जाऊंगा ।

फिर भी मुझे यकीन है,इस असमय, अमिलन के मिलन में ।

खंडहर-महल,महल-खंडहर हो गए,काल चक्र के चलन में ।

आज सुबह का प्रथम प्रकाश मेरे लबों पर गिरा हमारे मंजिल के हैं
कण-कण,आंखों में निखरे ।। हमारे दो तराने .....1

मैं जानता हूं एक को पा लेने से,दूसरा करीब आ जाएगा ।

या एक ही आवेश होने से,और दूर चला जाएगा ।

मेरे दो तराने मेरी मोहब्बत, मेरी मंजिल हैं

मैं मोहब्बत नहीं पा सकता,

जब तक मंजिल नहीं पा जाता हूं

अगर मंजिल के लिए दौड़ जाता हूं

पूरे जोर-शोर से

उम्र मोहब्बत की गुजर जाएगी तब-तक

तो प्यार कहां पाता हूं

यही दो मनोस्मृति लिए सुबह बैठ गया

असमंजस मे तब से दो तराने हैं मेरे मस्तिष्क में उभरे ।।

हमारे दो तराने.....1

# ऐसे नहीं जायेंगे

तुम्हें कितनी बार बतायें हैं

इन आंखों के ताराओं से ।

इन लबों की धाराओं से ।

इश्क में डूब-डूब के

इशारों में बहुत समझायें हैं

तुम्हें कितनी बार .....1

इसी तरह बहती जहां की धार में ।

धीरे-धीरे पिघलने लगे, तेरे इंतजार में ।

तुम्हें गम नहीं है किसी की

इसी बात को कई बार दोहरायें हैं

तुम्हें कितनी बार .....1

जब तक जीवन जीऊंगा,

एक आशा है-निराशा है ।

तुम कहीं मिल ही जाना

वरना जीवन एक तमाशा है ।

बस एक झलक से ही

हरा-भरा नहीं हो पाऊंगा ।

पर वीरान विस्तार से कुछ तो

हरा-भरा हो जाऊंगा ।

तुम कभी किसी मोड़ पे ठहर के

मुझसे ये मत कहना

मैं नादान थी उस उम्र में

तुमने इश्क नहीं सिखलायें हैं

तुम्हें कितनी बार .....1

# ऐसे नहीं जाएंगे

हम आए हैं तो, यु ऐसे नहीं जाएंगे

हमारे भी एक तराने,जर्मी के जवां गुनगुनाएंगे

हमने छोड़ा है पथ पे अमित-असीमित निशां अनेक

जिसे देख अचंभित आश्चर्यचकित हैं,मंजिलों के दिवां अनेक

कुछ रुक जाते हैं कुछ बढ़ जाते हैं

कुछ फिर लौट के आते हैं ।

उन्हें लकीरों पे चलके

खुशी-खुशी जीवन में तर जाते हैं ।

मेरा निशां,मेरा जहां,मेरा आत्मबल है

जिससे जीत लिया हमने,आज ही कल है

ये समर्पण जो हमने अपनी मंजिल पे कुर्बान किया

ये सत्य है इसी को अनेकों-अनेक दोहराएंगे ।।

हम आए हैं .....1

प्यार,बल,इच्छा,ललक,चाह,दीवानगी ।

सब मंजिल पे लुटाके,व्यक्त कर रवानगी ।

आज भी सच्ची श्रद्धा वाले,वीर-धीर पड़े हैं जग में

जो पिता नहीं पहुंचे तो क्या

आज बच्चे उनके ललहायेंगे ।।

हम आए हैं .....2

यहां सच्ची वीर जवानी

यहां ऊंची-ऊंची विजय कहानी ।

हर पथ पे नर ही नहीं

अब आगे हैं,सर्वगुण संपन्न मर्दानी ।

अगर ये सच्ची,लगन सच्ची श्रद्धा से

हर युद्ध लड़े तो बस इनके ही ध्वजा लहराएंगे ।।

हम आए हैं .....3

# कौन सी जाग गई है जिद

कौन सी जाग गई है जिद,जिंदगी में

मैं उफानो से टकरा रहा हूं ।

ना समझ,ना उपज की उपाधि लिए ।

बना हुआ हूं,एक अनोखी आंधी लिए ।

डरा हुआ है इलाका पूरा

भयभीत मैं भी कुछ-कुछ हूं

इस तपन,इस तपस्या का कौन सा अंजाम होगा।

मैं जीतूंगा या हारूगा,या बदनाम मेरा नाम होगा।

फिर भी एक नेक मस्तिष्क है

एक बेहद खामोश लब है

एक साफ-सुथरी नजर है,मेरे काया में

उसी की सत्यता पे प्राण करके

इस समय, मैं शैतानों से टकरा रहा हूं

कौन सी जाग .....1

न दिन का उद्गम है,,ना रात की जवानी है ।

ना कोई किस्सा है दिल का,न दिल की कहानी है।

मुझमें बेवफाओं का असर दिख रहा है

मैं सब कुछ भुलाकर,अलग चल रहा हूं

ये कैसी है जिंदगी-जिंदगानी के मेजबानी में

मैं तूफानों से टकरा रहा हूं

कौन सी जाग .....2

न आलस है न थकावट है

मेरी अजीब सी आज बनावट है

मैं ढूँढता नहीं हूं किसी के पद चिन्ह

मैं खुद लकीर खींच सकता हूं

मैं एक असीमित ऊर्जा लिए भीड़ से दूर चलता हूं

नदी द्रव्य हवा के संग,मैं सदा संवेग सा बहता हूं

आज एक परिंदे की उड़ान भरते-भरते

मैं तुफानो मानों से टकरा रहा हूं

कौन सी जाग .....3

# मैं हूं

मैं हूं,जिंदगी और मौत के बीच में

इस काल की मंदाकिनी में

मुख्य धारा में बह रहा हूं ।

एक किनारे पे मौत,दूसरे पर जिंदगी है

मैं अजीब उमस में रह रहा हूं ।

मैं जिधर भी ज्यादा झुक जाता हूं

मेरे स्वागत की गीत बजने लगते हैं ।

अगर मैं उस धार में रुक जाता हूं

तो खुद मेरे हाथ-पांव फूलने लगते हैं ।

यानी धरा के निवासी ठहर जाए तो

ओ खुद मौत के मुहाने हैं ।

मौत जब भी मुंह खोलेगी

उसके भोजन के निवाले हैं ।

सदा धर्म और कर्म के संग

एक अच्छे योनि में जन्म हुआ तो

मैं हूं इंसान और इंसानियत के बीच में

मैं हूं .....1

बढ़ना बस बढ़ना चाहता हूं

मौत हो या जिंदगी,मेरी दिशा में

मैं सिर्फ और सिर्फ चलना जानता हूं

ओ देखो वह लगातार चलता रहा

गिरते-उठते-संभलते शोर के अंबर में ।

हम भी लड़ रहे हैं लड़ाई

मुसीबत,दहशत,हार के दरबार में ।

मुझमे अभी से परिवर्तन दिख रहा है

कि मैं हूं दौलत और इज्जत के बीच में

मैं हूं .....2

# बदल गयी है नीर की धारा

ये बदल गयी नीर की धार

में पीर-पीर हो गया हुं

इसी जलनिधि के संग,ख्वाब बने थे हमने ।

इसी के संग मंजिल वाले राह चुने थे हमने ।

इसके अगल-बगल वाह,क्या स्वर्ग ठहरता था ।

मनोरंजन को इन्द्र संग पूरा देवलोक उतरता था ।

यहीं पर देव कन्याओं का,अतुलनीय नित्य होता था

मैं भी अक्सर नींद में,यही टहला घूमा करता था

पर जमाने वालों ने इन्हे कोसना आरंभ कर दिया।

एक-एक करके इन्हें,भेजना आरंभ कर दिया ।

उनका स्पर्श,उनका दर्शन नहीं हुआ तो

उनके नृत्य,गीत-संगीत का वर्जन नहीं हुआ तो

अब ये रुष्ट होके नाले का रुख कर ली है

व्याकुल हुए हैं किनारे वाले

मैं धीर-अधीर हो गया हूं ।।

ये बदल गयी नीर.....1

एक बड़ा सा मंच था,ओ भी गायब हो गया

लाखों-लाख गुंबद थे,ओ भी गिरा दिए गए

जमाने वाले बोले उब गए हैं,इन सब से

अब स्मार्ट सिटी बनाएंगे

इस वीरान ऊपर खबर बंजर को

मॉल-होटल-थिएटर से सजाएंगे

आज पानी-पानी,हवा-हवा करते हाफ रहे हैं । 21-22 की जवानी में,सब काप रहे हैं ।

देख सकते हैं आप टीवी चैनल और अखबारों में

अति दयनीय स्थिति है सबकी

अब मैं गंभीर हो गया हूं ।।

यह बदल गई है नीर .....1

# हम रहे या न रहे

हम रहें या ना रहें ये दीप जलते रहेंगे

आंधियो का फर्क बिखर-बिखर जाएगा ।

हम दम लगाएंगे, तो अधूरा भी निखर जाएगा ।

हमें सदा आसमान पे चलाना आता है ।

हमें सदा अंजान से जुड़ना आता है ।

तुम यह भी जान लो हमारे साये मे रहके -

हमें शीत,ताप,दाब में लड़ना आता है ।

तुम चाहे जितना चीख चिल्ला लो,आंखें फाड़ फाड़ के

इन्हीं मां के आंचलो से,वीर निकलते रहेंगे ।।

हम रहे या ना रहे .....1

ये सच्चाई है हम ऊंचाई पे जा रहे हैं ।

और तुझे तेरी नचाई भी बता रहे हैं ।

तू समझना चाहे,बढ़ना चाहे,निकलना चाहे -

तो हम तुझे ये राज भी समझा रहे ।

सब माने या न माने,तू मान ले

तेरे आंखों के सामने जो छोटे-छोटे बच्चे हैं

ये राह में गिरेंगे जरूर,लेकिन संभलते रहेंगे ।।

हम रहें या न रहें.....2

कल फिर कोई आएगा वेद,गीता,पुराण लेके ।

इस धरा पे अपना और आपका निर्माण लेके ।

स्वतंत्र हो के छोटे-छोटे नौनिहालों के

मन तरंगों के हर्षित तरंग चलते रहेंगे ।।

हम रहें या ना रहें .....3

हमारे अंदर एक ही खूबसूरती है ।

मेरे दिल में मेरे मां की मूर्ति है ।

अथाह सागर,अन्नत अंबर और जमी के सतह वाले

हमें चाहे जितना भड़काये,मां से इश्क करते रहेंगे।।

हम रहे या ना रहें.....4

# हवा का रुख बदल गया

हवा का रुख बदल गया

फिर उम्मीदें जग गयी हैं ।।

कल मुझपे बारिश हुई थी झमा-झम

आज रात स्वप्न आए थे बम-बम

तू घुंघट में शर्म आ रही थी ।

ओ अनोखी रस्म निभा रही थी ।

मेरे जिस्म के जाम में फिसल-फिसलकर

पलकों से पलक उठा रही थी ।

आज सुबह यही याद करते-करते

संघर्ष की लहरें उठ गयी हैं ।।

हवा का रुख बदल.....1

तेरे अंग-अंग बुलाने लगे हैं ।

हमें ख्वाब तेरे जगाने लगे हैं ।

मेरी विवशता जिस्म से अब निकल रही है

मेरे दिल की दिवानगी अब बदल रही है

मुझे लगता है वह दिन दूर नहीं

जब मैं तुम्हें सहलाऊगा ।

अपनी बाहों में सुलाऊगा

इश्क आंखों से पिला लूंगा ।

मेरे रास्ते में मोहक चित्र उतरते हैं ।

निगाहें अब केवल,मंजिल देखते हैं ।

अचानक मेरे अंदर चिंगारी क्या आयी

मेरे अंदर मशाल जल गयी है

हवा का रुख बदल.....2

# मेरे ईश्वर कोरोना का

मेरे ईश्वर कोरोना का कोहराम कब जाएगा

खिली कमल कलयुग की कल मुरझाई है ।

आन-बान-शान की सारी शौकत अकुलाई है ।

ईट पत्थरों से इश्क हुआ है

सब छत की छतरी में कैद हुए हैं

महफिल का मलवा मंजिल से दूर है

भूख-प्यास से सब मानव अन्य देख आतुर है

व्याकुल पिता का फर्ज,मां की ममता,

प्रेमियों का प्रेम है -

कोरोना को कतरने वाला,कतर राम कब आएगा ।

मेरे ईश्वर कोरोना का,कोहराम कब जाएगा ।।....1

सलाखों सी शैली सारे संसार की ।

दहक सके,दहका न सके हालत अंगार की ।

सबके मोबाइल शक्तिहीन हुए है

खचपच-खचपच करते ।

कोरोना,कोरोना,कोरोना हुआ संसार

कोरोना सहते सहते

असीमित-आसार,असमय-अकाल के समन्वय में

ये आजाद परिंदा,कब आजाद उड़ पाएगा ।।

मेरे ईश्वर कोरोना का,कोहाराम कब जाएगा ।।...2

कल्पित है काली-अकाली काया

बेबस है जीव-जंतु,जनमानस की माया

सत्य-असत्य,तर्क-वितर्क

सब के मस्तिष्क में मचलते हैं ।

हजारों हजार रूह-जिस्म मिलके,

कोरोना से बिछुड़ते हैं ।

कोई रोयेगा नहीं तेरे मरने पे तुम्हारे करीब

ऐसी महामारी के तत्व को कौन द्रव्य खाएगा ।।

मेरे ईश्वर कोरोना का कोहराम कब जाएगा ।।...3

# वहा कम ठहरे थे

वहां कम ठहरे थे,यहां ज्यादा ठहर गए

मेरे अंदर के मनोवेग ने

एक सुर साधा है ।

परिस्थिति अनुकूल है पर्याप्त

मगर अधर आधा है ।

आवाज निकलती है ध्वनि में

पर समझना मुश्किल है ।

एक ओठ में कंपन है अधूरा

घर पहुंचना मुश्किल है ।

हम उदास हैं अपनी राह से,अपने राह में

राहों में कदम बढ़ाते,अचानक डर गए ।।

वहां कम ठहरे थे,यहां ज्यादा ठहरे गए ।।....1

कुछ ज्ञानी घूमते हैं

मनोविज्ञान का ज्ञान लेके

ओ चेहरो के संवाद न पढते

,घूमते रहते हैं संवाद लेके

यहां सब आजाद हैं

कुछ कहने, कुछ लिखने को

मैं लिख नहीं सकता अनपढ़ हूं

मैं कहूं कैसे,अधर न साथ हैं चलने को

अकेलेपन की उड़न्त मार सहने को

ये अनायास घट गई दुर्घटना मेरे संग -

हम साथ निकले थे, मंजिल तक बिखर गए ।।

वहां कम ठहरे थे यहां ज्यादा ठहर गए ।।....2

# मै बूंद बूंद को तरसा हूं

मैं बूंद-बूंद को तरसा हूं अथाह सागर बहाऊंगा

मेरे ऊपर तुम बरसने लगती हो ।

मैं जानता हूं तुम अनंत में रहती हूं

असीमित ऊर्जा,असीमित शक्ति

असीमिता अवरोध लेके संग

जगह-जगह टहलती हो ।

मैं डरने वाला नहीं हूं तेरे भौकालो से

मैं हटने वाला नहीं हूं अपने ख्यालों से

तुम सुनो और सुनाओ अपने चाटुकारो को

मैंने अर्जित कर ली है शक्ति

अब सामर्थ दिखलाऊंगा

मैं बूंद-बूंद को .....1

तेरा चक्र चले या ठहर जाए

तू फिर जले या सवर जाए

मैं नहीं डरता तेरे प्रचंड प्रहार से

तेरे सुलगते अंगारों और मचलते हथियारों से

मुझे ये भी मालूम है तू राजनीति करती है

बल या छल किसी से भी पराजित करती है

तेरी प्रथम हार मेरे लेखनी से निकली है

मैं समस्त ब्रह्मांड पे अधिकार करके

रोम-रोम इठलाऊंगा

मैं बूंद-बूंद को .....1

तेरी बुद्धिमानी तेरी जवानी मेरे बाहों में कैद होगी

तू चाहे जैसा षड्यंत्र रचके निगाहों में कैद होगी तू लबों से चूमेगी या हाथों से सह लाएगी

तू छुप छुप के वार करेगी या युद्ध क्षेत्र में युद्ध लड़ेगी

मैं,एक पे एक हार देकर तेरे जीवन में

त्रिभुवन विजेता का ओ लंबा-चौड़ा तिलक

लगालूंगा

मैं बूंद-बूंद को .....2

# युग कल्पित काया

वह मौत की चादर ओढ़े,

कल यहीं पर सोयी होगी

उनके राह में जाने कैसे ब्लैक होल टहलते थे ।

हर पल आंधी-आंधी लिए उसको देख उबलते थे वह नहीं हारा,हार गए भौतिकी के रहस्य

हर नियम रौधते,जो उसके अगल-बगल चलते थे हर खुशी प्रतिपल उसको मिले ।

उसकी मंजिल उसके संग चले ।

हम यही सोच उसको लड़ना सिखाते हैं ।

देश हित का प्रण थामें

हिम्मत अपने सर बांधे

उसको अपने पथ पे हम चलना सिखाते हैं ।

यही जोश-जज्बा'जुनून लिए

इसी पथ से गुजरती थी

यह वही पथ था जहां दिन में सूरज उगता था ।

और निशा में लौटते वक्त,हमेशा चांद रहता था ।

कल सूरज को बादल रोका

चंद्रमा अपने घर गयी थी

अपने उमंग हर रंग के संग

वह भी शहर गयी थी

तोड़ के तिलमिस छोड़ के खुद को

उन दरिंदों से लड़ते-लड़ते

कल यहीं पर रोयी होगी

वह मौत की चादर ओढ़े .....1

ये कपड़े किसके आज तलक

उड़ते हैं हर आंधी में ।

ये खून किसके आज तलक

चमकते हैं हर पानी में ।

किसके वाहन के बिखरे हैं कलपुर्जे ।

किसके स्मार्टफोन के यहीं पड़े हैं टुकड़े ।

आखिर किसके डायरी के उड़ते हैं चिथड़े ।

आखिर किसके हैं ये सब बिखरे हुए कचड़े ।

कचड़े-कचड़े,कचड़े, ये कचड़े ।

कल मां की ममता ,पिता के फर्ज

भाई के प्यार या किसी के उपहार

इन्हीं में से कुछ तो रहे होंगे

मुझे लगता है दबंगों ने पहले जबरन रोका होगा।

फिर चिथ-चाथ,फाड़-फूड़ का खाका फेंका होगा।

फिर,फिर, फिर जानवरों का झुंड

युग कल्पित काया पर टूटा होगा

और,और,और मुझे लगता है सूत मुक्त काया

कल यही पर खोयी होगी

वह मौत की चादर ओढ़.....1

चांदनी रात है आज,सवर जाओगी ।
सुंदर मुहाने दिल भवर जाओगी ।
जब उठेंगी तरंगे जिस्म की सतह से -
चंद्रमा की तरह तुम उभर जाओगी ।।

इतनी सुंदर थी पलके उठायी नहीं ।
कितना प्यासा था चल के आयी नहीं ।
सब उमस थी अधर के किनारे खड़ी -
जा अधर रो दिए दिल लगायी नहीं ।।

कई दिन से ओ रूठी है, मनाने आज जाऊंगा ।
दिल ओ दिमाग में है ओ, अपनाने आज जाऊंगा।
उसके साथ ही हमने, मंत्रों संग लिए फेरे -
तो जो रिश्ता है हमारे बीच,निभाने आ जाऊंगा ।।

चांदनी बिछी हुई है, गगन भर ।
नमी है आज अजब, भुवन भर ।
ओ तो झूम के,बरसी है इश्क की बूंदे
मैंने एहसास किया है बदन भर ।।

नित नये-नये आयाम से,तुम्हें मिलना होगा ।
आसमां के प्रचंड प्रहार से,तुम्हें लड़ना होगा ।
हर उम्र-हर पड़ाव में तनहाइयां पीकर -
उस फिसलन भरी राह से,तुम्हें उतरना होगा ।।

उसके नयन से नयन के दीवाने,सहम से गये।
उसके रुखसार के खजाने,असम से गये ।
ओ मॉल में एक दिन,मुझसे टकरायी-
लगा सांसों के तराने, थम से गये ।।

मेरे प्रश्नो के हल,तुम हो ।
मेरे सपनो के कल, तुम हो ।
स्वर्ग के कल्पवृक्ष की, मैं शाखा रहा -
मेरे शाखो के फल,तुम हो ।।

तुमसे पुनः बात की उम्मीदें हैं ।
तुमसे कल बारात की उम्मीदें हैं ।
तू गुजर गयी मेरे करीब आ के -
तुमसे फिर मुलाकात की उम्मीदें हैं ।।

नूर पिघला चेहरे से,बहार में ।
मिली मायूसिया हमें,तेरे इंतजार में ।
क्या खता कर दी मेरे इश्क ने -
जो अश्क के तोहफे,मिले उपहार में ।।

इश्क ओ, जिसमें राहे बात करें ।
इश्क ओ,जिसमें बाहें बात करें ।
फिर जीने मरने की रस्म निभाते हुए
इश्क ओ,जिसमें निगाहें बात करें ।।

कंकड़ीली-पथरीली जमी पे,खिलखिलाते मिली।
मायूम चेहरे पे हंसी, तराते मिली ।
जिन से पूछा अजनबी रास्ता कल चौराहे पे -
आज मंजिल पे वही मुस्कुराते मिली ।।

सब जलाते हैं अनार,दिवाली में ।
सब बुलाते हैं बाहर, दिवाली में ।
अमावसी छटा में,चिरागों की ज्वाला से-
प्राकृतिक करती है श्रृंगार दिवाली में ।।

मिला मुझको पवित्र प्यार का बंद ताला ।
मिला मुझको मस्त बाहर का बंद ताला ।
घर गया था,सफर करके तुम्हारे घर -
कि मिला मुझको तेरे द्वार का बंद ताला ।।

खिले-खिले से शबनम तुम्हारे हैं ।।
मेरे जख्मों पे मरहम तुम्हारे हैं ।।
तूने अनंत खुशियां पिरोया मेरे किस्मत में
तो मेरे खुशियों के मौसम तुम्हारे हैं ।।

उम्र का सारा रास्ता मोड़ के ।
चली गई खुशी गम छोड़ के ।
कैसी ख्वाहिश लिए,ओ खामोश गयी
जन्मो जन्मो का नाता तोड़ के ।।

जुल्फें रंगी है, सातों रंग से ।
खूबसूरत लगे, अंग - अंग से ।
निकल के रूम से,ऑफिस गयी
चैट करते हुए,दिल तरंग से ।।

लोक-लाज से, दुश्मनी तोड़े ।
सारे बंधनों की,बंधनी खोलें ।
निकली है,चांदनी शॉपिंग करने
रंग गुलाल की,ओढ़नी ओढें ।।

ये मंजिल प्यार की है परिवार वालों ।
ये मंजिल संस्कार की है परिवार वालों ।
इश्क में रूह-जिस्म-जाम,एहसास विश्वास है
तो ये मंजिल बहार की है परिवार वालों ।।

लुटाने को मुझपे प्यार, उठो यार ।
बताने को इनको सार, उठो यार ।
बड़ी उम्मीद-बड़े विश्वास के संग
हम आए तेरे द्वार, उठो यार ।।

कई जन्मों से चलके आयी हो ।
बस मुझपे ही पलक उठायी हो ।
तो बनके जिगर का प्राण मेरे -
मेरे नाभिक में तुम समायी हो ।।

निकल गए जान-जुबान,तुम कहां थी ।
ढह गए गुमान-अभिमान तुम कहां थी ।
हम गए थे तुमसे मिलने,तुम्हारे शहर -
लुट गए शान-सम्मान, तुम कहां थी ।।

बह गया उम्र लिए,उसके निगाह में ।
लुट गया सार-संसार,अंधेरी राह में ।
छुट गए घर-द्वार,यार-रिश्तेदार -
ढह गया वजूद मेर, तेरे बाह में ।।

जैसे जिगर कि मेरे, जवानी गुजरे ।
करीब होके मुझसे,मेरी कहानी गुजरे ।
जिस दिन झलक तेरी दिख जाए मुझे
ओ दिन सुहाना,रात सुहानी गुजरे ।।

मैं मर जाऊंगा, तुम न आना कभी ।
एक झलक अपनी,मत दिखाना कभी ।
हम निभाते-निभाते, संबंध मर मिटे -
तुम हंसना-मुस्कुराना,मत निभाना कभी ।।

तुम संघर्षी पुत्र हो, जज्बात में चांदनी है ।
तेरे कंठ विराजे सरस्वती,बात में चांदनी है ।
तो बढ़ चलो, अन्नत के नैनीहालो -
दिन में सूरज उगे, रात में चांदनी है ।।

सुबह आने को है,रात जाने को है ।
चांद-तारों को हाथ, पाने को है ।
मुझे देखकर मुझसे नैन मिला के
एक मासूम चेहरा,मुस्कुराने को है ।।

जीत लेती है ओ कलाओं से ।
मोह लेती है मन अदाओं से ।
तिरछी नजर,उत्सुक अधर,खिला जिगर
डर लगता है मुझे,अप्सराओं से ।।

उतारकर ओ नकाब,निगाहों में आयी।
पहनकर प्रेम परिधान,राहों में आयी ।
स्वर्ग के सारे मानक तोड़कर -
स्वर्ग की अप्सरा, बाहों में आयी ।।

आंखों-आंखों से,अंगड़ाइयां मिटाएगी ।
वर्षों-वर्षों की, तन्हाइयां मिटायेगी ।
चूम कर, ओठो को होठों से -
जन्मों-जन्मों की, दूरियां मिटायेगी ।।

ओ मेरे लिए ही,अपनी पलकें उठाए ।
भरी महफिल में मुझे,आंखों से बुलाए ।
अदाओं-कलाओं का गजब प्रदर्शन करते
ओ चुम कर हाथ, हवा में लहराए ।।

खुशी-खुशी मेरे पास,नचके आएगी ।
मेहंदी हथेलियों  में, रचके आएगी ।
मेरे सपनों के सुनसान महल में-
अप्सराओं के जैसी, सज के आएगी ।।

देखने में ओ, मुझे  अंगार  लगी ।
हाव-भाव से मुझे,संस्कार लगी ।
जब इश्रत भरी मेरी अर्चना, ठुकरायी
तो प्रदर्शन से ओ,व्यंग्यकार लगी ।।

हर दफा,इजहार किया है हमने ।
उसे सदा,बेकरार किया है हमने ।
देख उसकी बारात,मालूम हुआ मुझे
कि एक तरफा प्यार किया है हमने ।।

सारा इश्क-सारा प्रेम,उमड़ता था हर कथन में ।
खुद का न पता, न ख्याल था मेरे जतन में ।
कितनी अमृत भरी वाणी,कितने मीठे थे भाव
जब जवानी थी, मेरे बदन मेरे नयन में ।।

मेरी हर सोच में तू शामिल है ।
मेरी हर खोज में तू शामिल है ।
संवेदना भावना में,कल्पना मात्र से
मेरे एक रोज में तो शामिल है ।।

अनोखी अदाओं का मैं,शाम बन गया।
प्यांसो-एहसासों का मैं,जाम बन गया ।
एक चुटकी सिंदूर के कमाल से -
उस दीवानी का मैं, गुलाम बन गया ।।

ओ गयी है, मेरे सपने बदनाम करके ।
अपनी मोहब्बत,में मुझे गुलाम करके ।
मैंने मुस्कुराना छोड़ दिया,उसके मुस्कान पे
ओ खुश है,मेरी मुस्कान नीलाम करके ।।

तुझे पाने को हमने, हर काम किया ।
अपना घर-शहर,गांव-गली,बदनाम किया ।
कि रात आयी बहुत मस्त,बिल्कुल खूबसूरत
जो हर पल-हर लम्हा, तेरे नाम किया ।।

मुझे मिलना है आज तराने से ।
छुप-छुप कर सारे जमाने से ।
हम भेजते हैं,मेल-मैसेज तुम्हें -
नए वर्ष के नए बहाने से ।।

चमकता बदन है, बदन का नूर देखो ।
इन आंखों से जमी, का कोहिनूर देखो ।
छा गई है हर निगाहों की तस्करी पे -
तो लबो,नैनो,जुल्फों का,जबरदस्त गुरुर देखो ।।

सातों वचनों को तुम निभाओगी कब ।
अपने बाहों में मुझे, सुलाओगी कब ।
पायल-चूड़ी-झूमर,पैजनी-करधनी लिए
उम्र ढलने को है, आओगी कब ।।

अपनी खुली जुल्फें,तुम बिखरा देना ।
सारे बाध्य-बंधन,तुम ठुकरा देना ।
हम मिलेंगे,कभी ना कभी जरूर -
तो उस पल तुम, मुस्कुरा देना ।।

डरे - डरे से थे, सहारा किया हमें ।
महज किनारा थे,मुख्यधारा किया हमें ।
गुलाबी लबों से गुलाब चूमकर -
तिरछी नजर से,इशारा किया हमें ।।

बहुत खूब है खूबसूरत,परियों से जचती होगी ।
खुले आसमान में, सितारों संग हसती होगी ।
चंद्र के शौर्य में, चांदनी से लिपटकर -
वाह क्या लगती होगी,वाह क्या दिखती होगी ।।

करवटें बदलता रहा जिस्म,अंधेरे में ।
सिमट गयी उम्मीदें, स्वप्न घेरे में ।
क्यों स्वीकार नहीं किया,हमें-तुम्हें जमाना
आखिर क्या कमी थी, तेरे-मेरे में ।।

लुटाने को मुझ पे प्यार,उठो यार ।
बताने को इनको सार,उठो यार ।
बड़ी उम्मीद पड़े,विश्वास के संग-
हम आए तेरे द्वार, उठो यार ।।

तड़प-तपन सहती, हर कलियां हैं ।
हवस-हैवानियत की,प्रेम गलियां हैं ।
क्या बताऊं फोन,फेसबुक से -
मेरा हाल पूछती,मेरी सहेलियां हैं ।।

है अगर प्यार तुझे, बताऊं तुम ।
नजर नजर से हरदम,मिलाओ तुम ।
सब बताते हैं मोहब्बत,प्यार के दिन
तो आज दिल से पर्दा,उठाओ तुम ।।

मैं पा गया हूं उसे, उसके ही जुबान में ।
मैं नजर आता हूं उसे,उसके ही मुस्कान में ।
चढ़ने को है रंग, गुलाबी लबों पे -
मैं जीत गया हूं उसे,उसके ही इंतहान में ।।

बेरुखे - बेमजे, रंगों में खोने का ।
अजनबी-अन्जान जिस्म संग,सोने का ।
एक अजीब सी चमक पे कुर्बान होके-
ले लिया ठेका उम्र - भर रोने का ।।

जिसे पाने में जिस्म की,धुलाई हुयी।
घर वालों से जमके, लड़ाई हुयी ।
क्या बताऊं हाल ए दिल, में -
उसके संग, गैर की गोद भराई हुयी ।।

खोल के आयी थी बाहें,मैं खोया नहीं ।
जा रही थी छोड़ कर, मैं रोया नहीं ।
अब खटकने लगा उसका जाना मायूस होके
रात भर पीके मदिंरा, मैं सोया नहीं ।।

कहेगी मानती हूं तुझे,कैसे ऐतबार करूंगा ।
कहेगी जानती हूं तुझे,कैसे ऐतबार करूंगा ।
मिल के कभी, कहीं रास्ते में -
कहेगी चाहती हूं तुझे,कैसे ऐतबार करूंगा ।।

आओ हम तुम मुस्कुराए मन तरंगों में ।
आओ हम नजर मिलाए, रंगीन रंगों में ।
शहर के शाम से तुम,गांव के प्रभात से हम
आओ हम घुल-मिल जाए,प्रेम प्रसंगों में ।।

बेचैन रूह थी, उत्सुक शहर में ।
दीप एक जगमगाया,अंधेरे जिगर में ।
मेरे विस्तृत उर पे,आंखों का चुंबन -
जलमग्न हो गई पहली नजर में ।।

अनायास एक बात में,भिड़ हम गये ।
एक अंधेरे राह को, मुड़ हम गये ।
सारी सल्तनत लगी थी,हमें बचाने में-
कि सुबह होते-होते,बिछुड़ हम गये ।।

खुद पिघलने लगे,धम्म के आवरण।
सो सुधरने लगे,प्यार के आचरण ।
तुमसे मिलके,अचानक ज्ञानी हुए -
हम समझने लगे,आंख के व्याकरण ।।

उम्र भर का मेरे,सबसे प्यारा मौसम ।
जो था सिर्फ,हमारा-तुम्हारा मौसम ।
मुझे रुलाए,डराए,तड़पाए सदा -
तेरी यादों में डूबा,ओ दुलारा मौसम ।।

पूर्णिमा की चंद्रमा है, चांदनी बिखेरे ।
ढल रही है रात, बड़े धीरे - धीरे ।
आलीशान बंगले की खिड़की,जब खोलती हो
सुर्य सा दर्शन तुम्हारा रोज सुबेरे-सुबेरे ।।

घूम जाएंगे दोनों बात-बात में ।
भीग जाएंगे दोनों उस रात में ।
बरसेंगे जब बादल झमाझम रे -
डूब जाएंगे दोनों मुलाकात में ।।

# पंक्तिया

तेरी जुल्फों के बहाव,नैनो के घुमाओ से
मदहोश है युवा दिल ।
तेरे कान के झुमके,नाक के नग ने
लूट ली पूरी महफिल ।।

**पंक्ति :-**

मैं पल-पल जीता मरता हूं,यही अनोखा राज लिए।
तु एक दिन जरूर आएगी, मोहब्बत का ताज लिए।

सब दीवाने हो गए यहां
तेरे मीठी-मीठी जुबान से ।
उलट गए बड़े-बड़े धन्ना सेठ
तेरे मंद-मंद मुस्कान से ।।

जो उड़ गए दीवाने मानकर मनाकर
ओ जवां बस यादों में ही रहते हैं ।
जब नहीं दिखते दिन में चांद-सितारे
तो मान लो कि रातों में ही उगते हैं ।।

मैं सब कुछ लुटा दिया बस जान मांगा
क्या मेरी ये हसरत जुर्म थी ।।
कर्ज लिये और कर्ज में डूब मरे
क्या ये मेरे मरने की उम्र थी ।।

एक तेरी बहन बंधनों में बध के जहां जीती
और मुझे सर उठाने को विवश कर दिया ।
तेरे जन्म पे ढिंढोरा पिटवाया कि पुत्र हुआ है
आज तूने ही सर झुकाने को विवश कर दिया ।।

जिस दिन से देखा तुझे
तेरी यादों का खुमार चढ़ गया है ।
तुझमें खोया खोया रहूं मैं
तुझे पाने का बुखार चढ़ गया है ।।

**पंक्ति :-**

अगर हम नहीं आते ,यहां शाम को ।
ये जवां चले जाते ,अपने धाम को ।।

निगाहें उठी इस धरातल से
उसके चेहरे पे पड़ी,यु पड़ी रह गई ।
इतनी सर्मायी ओ मेरे नजर से
की पलके झुकी,यु झुकी रह गई ।।

एक तरफ से दिल की आवाज सुनता हुआ
एक तरफ से दिल की आवाज कह रहा है ।
एक लड़की के संग जिंदगी गुजरता हुआ
एक लड़की से दिल का राज कह रहा है ।।

तेरी गहराई देख, मैं अंदाज लगा बैठा
अपना जाम छलका- छलका, तु किसी को सीच सकती है ।
जब मैं लुट गया एक, लुटेरा होके -
तो तेरा हुनर ऐसा है, तु किसी को जीत सकती है ।

वक्त के हिसाब से दो युवा
एक साथ चलने लगे,स्कूल से निकल के सड़कों पे |
समझ न पाया वक्त की पुकार नासमझ जमाना शाम होते-होते,
खूब लाठी-डंडे चले दोनों घरों से ।।

जो जो उतरा,खो गया मानो
यार गहरे ऐसे हैं ।
नजर नहीं हटती,होश नहीं रहता
कुछ चेहरे ऐसे हैं ।।

**पंक्ति :-**

हमने घर में घुट घुट के,प्रसंगों की दुनियादारी देखी है ।
और सड़कों पे रुक रुक के नैनों की मारामारी देखी है।। 1

स्वप्न में थी तो कल्पना थी
नजर में है,तो एक चित्र है ।
बाह में थी तो जिंदगी थी
साथ में है,तो एक मित्र है ।।

हर कदम चलने से पहले तुझे रुकना होगा
अपनी पिछली खामियां आंकने के लिए ।
हर एक हारी हुई हार सिखनी होगी
अपनी हारी हुई बाजीयां जीतने के लिए ।।

दिन गुजर जाएंगे तेरे
बिना हंसी के, तू दिन रात हसा कर ।
मार डालेगी तन्हाई तुझे
इंसान है तू, इतना अकेला मत रहा कर ।।

हजारों खत मिलते हैं मुझे हर रोज दरवाजे पे
हर एक खत का अपना हौसला होगा ।
अपने तरफ से कसर ना छोड़ो सब जानते हैं
ईश्वर का फैसला हमारा फैसला होगा ।।

जिसे न खोना था जन्मो जन्म
जुदा हुआ,ओ अश्क याद आता है ।
हर दिन जिसे भूला रहता हूं
हर रात,ओ शख्स याद आता है ।।

**पंक्ति :-**

तू धन्य है होती,जवानी की अविरल तरंग फेंक फेंक के ।
मैं करीब-करीब का एहसास करता हूं, तुझे बस देख देख के ।। 1

घरवाली-दिलवाली के बीच
देखो,कैसे मैं रिश्ता निभा रहा हूं ।
सर किसी के गोद में रखकर
दिल्लगी,किसी और से लगा रहा हूं ।।

एक कदम थी दूर तू,एक कदम थे दूर हम
हम दोनों के बीच में,कुछ कदमों की दूरी थी ।
एक दूजे के हुए कब के थे हम-तुम
एक दूजे के होने में,कुछ लम्हों की दूरी थी ।।

जमी पे प्रीत बाकी है ।
दिलों की शीत बाकी है ।
इस जगत में जो जो हारा है
उसकी अभी जीत बाकी है ।।

स्याह रात गुजरी है साथ-साथ
तू अब मत कर गुरुर ।
हाथ में हाथ है,जिगर पे जिगर
नजर पे नजर होगी जरूर ।।

बिन तेरे बाहों के मधु-मधुकर
इतने शिद्दत से कौन पिलायेगा ।
सर गोद में रख कर मेरी जान
इतने मोहब्बत से कौन सुलाएगा ।।

**पंक्ति :-**

ये रंग जिंदगी का हिस्सा है, एक दिन पस्त हो जाएगा ।
कई सूरज उगेंगे, फिर अंधेरा अस्त हो जाएगा ।

रोज सपनों का मजाक और जाता है
काल्पनिक दुनिया में,सैर करते-करते ।
अजब दशा हुई है दिल,जवां,ज्जा की
धैर्य ही खो कर,धैर्य रखते - रखते ।।

वक्त आएगा एक दिन ऐसा
खचाखच खुशियों से भरा,हर त्यौहार होगा ।
तू बुलंदी को बस चूम ले
तेरे राह का, हर राही तेरा यार होगा ।।

दूर का जलवा जुनून ही अलग था
फोन में कहते थे, मैं तेरी जिंदगी हूं ।
जरा करीब से देखो मेरी दो आंखें
मुझसे प्यार करते हो, मैं तेरी संगिनी हूं ।।

तुझे पाला-पोसा,पढ़ाया-लिखाया,बड़ा किया
पाई-पाई का कर्ज,उतार कर जाना होगा ।
कैसे चांद की चांदनी धरती पर आए
जो बादलों ने ठान लिया,मार के जाना होगा ।।

मन,मनन और तन से मोहक थी
ऐनको से क्या देखुं उसे ।
नग्न आंखों से ही बहुत सुंदर थी
मानकों से क्या परखुं उसे ।।

**पंक्ति :-**

जब तक तुम अपनी नजर में न खोए थे ।
क्या संसार था ,लैला-मजनू सोए थे ।। 1

उत्सुक था उसका जिगर,उसका अधर
मेरे संग हर लम्हा जीने को ।
लहरती सच में थी,उसकी जुल्फें
मुझे देख, मेरा बदन छूने को ।।

तेरे हर टेस्ट में मैं फर्स्ट रहा
तुम्हारे तरफ से आज,मुझे जॉब मिलेगा ।
खूबियों का खूबरंग समेटे मेरी जान
तुम्हारी बाहों में आज,मेरा ख्वाब मिलेगा ।।

तोड़कर सफर की बंदिसे सारी
ओ छोड़ कर गयी आधा-अधूरा ।
गुम हुई चांदनी अचानक रास्ते से
उम्र भर रहा छाया अंधेरा ।।

मेरे लफ्जों की खेती को किसी एक लव ने सिचा है उसके रसपान से, गुलजार हुआ हूं मैं ।
तो कैसे स्वीकारें दूसरों का आमंत्रण उन्हें ठुकरा के जिसके मेहरबान से,सदाबहार हुआ हूं मैं ।।

हम तो लड़ गए,परिवार-संसार से
तुम्हारे वादे पे गुरुर करके ।
तुम तो मुकर गयी,अपने परिवार संग
मेरा दीवानापन मशहूर करके ।।

**पंक्ति :-**

तू उम्मीद उतनी रख, जितने हद जितने कद पाए हैं
यहां ख्वाब ए फलक पे , सबसे अधिक किराए हैं

मेरे जिस्म का इत्र,महक गया उसे
देखने को मुझे,ओ खिड़कियां खोलती है ।
उसकी सास ने उससे,वजह पूछ ली
कड़ाके की ठंड,ओ गर्मियां बोलती है ।।

एकतरफा प्यार के जश्न में,डूबा रहा उम्र भर
प्यार अपना बता ना सका,यही मेरी खता थी ।
वरमाला जैसे पहनाया शख्स,मेरी जान के गले में
मेरे सम्मुख,मेरे हसरतों की जलती चिता थी ।।

हसीन हकीकत में जो, डूबा रहा रात भर
उसी से सुबह - सुबह, इंतकाम लिया गया ।
सरपंचों- मुछन्दरो द्वारा,उसकी धज्जियां उड़ा उडा कर
उसका घर, घराना, गांव, बदनाम किया गया ।।

एक दौर था तुम्हें मालूम ही क्या
पैरों पे जमी, हाथों में आसमान था ।
कुछ कहना ठीक नहीं मगर सुन लो
मेरे कैद में तो,शैतान और भगवान था ।।

मैं नहीं चाहता था,इस जुदाई के बाद
सिर्फ यादों की एक धारा रहे ।
बड़ी हसरत थी,कि तुमसे कुछ मांग लू
ताकि मुलाकातों का आगे सहारा रहे ।।

**पंक्ति :-**

जब अपने लोग,अपना होने से इनकार करते हैं ।
तब हम जैसे लोग,उस सत्य को स्वीकार करते हैं।।

तेरे लबों,नैनो,चेहरों के हदो पे
यही कहूं,संदर्भ कोई ।
कि उतरकर आ गया मेरे बाहों में
स्वर्ग से, स्वर्ग कोई ।।

मेरी तस्वीर निहारते सीने से जब लगायेगी
मान जाऊंगा मैं मुझमें खो लिया ।
मुझे याद करते जब पलकें गिर जाएंगी
समझ जाऊंगा मैं तुमने सो लिया ।।

ना मैसेज, ना फोन, ना फोटो, बिना काल्पनिक मिलन के
मिल जाए जिसे सर्वगुण संपन्न देवी वह बहुत भाग्यवान है
जिसे न देखा, न समझा, न जाना, न पहचाना, कभी
ओ समर में कितना साथ देगी, ये महज अनुमान है

बारिश-धूप-ठंड बड़े से बड़े दर्द
सब सह लेते थे, तेरे वास्ते ।
घर से निकलना घर के लिए
ओ बाग-बगीचा,टेड़े-मेढे रास्ते ।।

हर तूफानों से टकरा वहीं
जिनकी परवरिश तूफानों ने की ।
हार गयी हर बाजीया जीत
चढ़ाई जब-जब दीवानों ने की ।।

**पंक्ति :-**

बड़ी करतबी निकली,सुबह की आई शाम पे ।
लेकर दूध की प्याली,चली इश्क ऐ अंजाम पे ।।

न चाहने वालों की कभी कमी होगी
न बुलाने वालों के नयन थकेंगे ।
न समझाने,धमकाने का सिलसिला थमेगा
न चलने वालों के कदम रुकेंगे ।।

बाहों में रहके निगाहों में रहके
तुमने दिखाए थे अनेकों-अनेक ।
इस मंजिल पे,इस महफिल में
कहां हुए, तेरे-मेरे सपने एक ।।

कोमलता से भरी हुई, उमस की मारी आतंकित जवानी
अर्थ - अनर्थ समझे बिना, सुबह-सुबह शाम करती है ।
ये एक किसम की रात है,जो ढालने का नाम नहीं लेती
मेरी बाहों से चिपक के, जिंदगी बदनाम करती है।।

बड़े कड़क बंधनों में बध के
तुमसे मिले और गुलजार हुए ।
तन-मन की मेहनत जाया हुई
हमारे ही जैसे अविष्कार हुए ।।

हर पल याद करूंगा उसे
अपनी जमी,अपने द्वीप की तरह ।
उसकी यादें ना बुझेंगी कभी
हथेलियों से घिरे,दीप की तरह ।।

**पंक्ति :-**

जिनकी आयी ही नहीं, ओ क्या समझे कहानी ।
जिनकी गुजर गयी है, ओ समझते हैं जवानी ।।

बेबसी, तड़प, उमस, वबेचैनियां
हर रोज सोती हैं मेरे साथ ।
मेरी उम्मीदों के मुताबिक,कुछ भी न रहा
सिर्फ मायूसीया लगी मेरे हाथ ।।

मैं नादान,नासमझ हूं
मुझे मालूम है मेरी नादानियां ।
तू पढ़ी-लिखी माशूका है मेरी
तुझमें नहीं है कोई खामियां ।।

मिलके हम- तुम रात जब गुजारने लगे
रात की औकात न रही कि मुझसे बात कर सके।
बरसो गुजर गए धीरे-धीरे साहस न हुआ
फिर कभी भविष्य में मुझसे मुलाकात कर सके।।

मत दिखाना ब्राह्मणों-पंडितों को कुंडली
हम अपनी कुंडली स्वयं बना लेंगे ।
क्या कर लेगा मुछंदरों का तौर-तरीका
कोर्ट में जाकर शादी रचा लेंगे ।।

जिनके ख्वाबों-ख्यालों में न रहा कभी
आज इजहार कर बैठी है ।
जो नजर मिलाने के काबिल ना समझी कभी
आज वही,प्यार कर बैठी है ।।

बढ़ चले हैं पथिक दो, संग- संग वक्त के
लोगों के बनाए हुए किलो से दूर ।
देख इन्हे ,कैसे-कैसे करतब दिखाती हैं आज
खुद में खोई हुई मंजिलों से दूर ।।

देखने के लायक है ओ मुखड़ा
बिन दुल्हन जिस की बारात गुजरे ।
बुज्जिल है ओ जिगर-ओ शख्स
करवट बदलते जिसकी रात गुजरे ।।

तारीफों के पुल तू न बांध
बांधेगा ये जमाना ।
जन्म से यही सीखा हूं यार
अचूक है मेरा निशाना ।।

ये समंदर , ये लहर , ये अंबर
मुझे बुलाती हैं, मैं सिहर जाता हूं ।
कितना लगाओ है इन दृश्यों से मुझे
हर तरफ घूम के, यहीं ठहर जाता हूं ।।

सिर्फ मोहब्बत को जिये जो मरे
हो जाए उसका अंत ।
मोहब्बत की उम्र छोटी सी है
जीवन की धारा अन्नत ।।